International Journal of Social Science and Education Research

ISSN Print: 2664-9845
ISSN Online: 2664-9853
Impact Factor: RJIF 8.00
IJSSER 2024; 6(1): 87-89
www.socialsciencejournals.net
Received: 05-12-2023
Accepted: 10-01-2024

डॉ सुमन यादव
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ सुमन यादव
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में

डॉ सुमन यादव

DOI: https://doi.org/10.33545/26649845.2024.v6.i1b.83

प्रस्तावना

जनजातीय समाज राष्ट्रीय संस्कृति की धरोहर है, जिससे किसी राष्ट्र की आत्मा को जाना जा सकता है। भारतीय संदर्भ में यदि राष्ट्र को जानना हो तो जनजातीय समाज को जानना आवश्यक है। वे प्रकृति के उपासक हैं तथा प्रकृति ही उनके जीवन के विविध आयामों का संचालन करती है। वे पर्यावरण के संरक्षक और सम्वर्धक हैं। वे राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चरित्र के जीवन प्रतीक हैं, किन्तु खेद की बात है कि आज वे अत्यन्त ही पिछड़े और उपेक्षित हैं। आजादी के बाद भारतीय संविधान और अन्य अनेक योजनाओं के माध्यम से उनके कल्याण के लिए पिछले दशकों से निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं, भारतीय संस्कृति की मूल परंपरा आज भी पर्वतों, जंगलो, समुद्रों, घाटियों में निवास करने वाले समुदायो द्वारा संरक्षित है भारतीय समाज मे जनजातीय समुदाय की महतवपूर्ण भूमिका है। मध्य– प्रदेश भारत का एक जनजातीय प्रदेश है प्रकृति प्रेमी, संरक्षक कहे जाने वाले अभी तक अपनी विचित्र परंपराओ आदिम रीति रिवाजों समाजिक मान्यताओं विश्वासों, द्वारा जनजातीय संस्कृति को संरक्षित करने मे समर्थ रहे है। मध्य–प्रदेश मे जनजातीय समाज का योगदान हमको आधिक्य देखने मिलता है। चाहे वो प्रकृति संरक्षण का विषय हो, या भारतीय संस्कृति के संरक्षण की बात हो या समाज मे महिलाओं की स्थिति को लेकर उदाहरण प्रस्तुत करना सभी क्षेत्रो मे जनजातीय समाज की भूमिका हम देख सकते है। मध्य–प्रदेश की बैगा जनजाती प्रमुख जनजाती है गोड़, भील, अगरिमा, भारिया, बिराहुल, कारकू ,सहारिया तथा अन्य जनजाती भी पायी जाती है ।

उद्देश्य

1. जनजातीय समाज मे महिलाओं की क्या स्थिति रही है व वर्तमान मे हुए परिवर्तनों का उल्लेख करना।
2. भारतीय संस्कृति संरक्षण मे किये गये उनके योगदानो का अध्ययन कर उसका प्रकटीकरण करना।
3. जनजातीय समाज की महिलाओं मध्यकाल से अब तक अपने परिवार के साथ–साथ समाज को भी दिशा दिया हो इस तथ्य को अध्ययन के माध्यम से समाज के सामने लाना।
4. जनजातीय समाज की ऐसी बहुत सी महिलाएं है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया लेकिन उनका उल्लेख हमे इतिहास के पन्नो में देखने नही मिलता, इस शोध कार्य के माध्यम से उनके योगदान को विश्व पटल पर लाने का प्रयास किया जायेगा।
5. जनजाती समाज प्रारंभ से ही महिलाओं को उच्च स्थान पर रखता आ रहा है। आज की नारीवाद एवं जनजाती समाज मे महिला का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. जनजातीय महिलाओं को शासन द्वारा दी जा रही सुविधाओ का जानकारी का उल्लेख करना।
7. जनजातीय समाज के विषय मे लेख के माध्यम से जो भ्रांतिया उत्पन्न की गयी है। उनका खंडन करना।

शोध कार्य की पृष्ठभूमि

मध्य–प्रदेश जनजाती बाहुल्य राज्य है। राज्य मे कुल 46 जनजातीयाँ निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनजातीय आबादी 1 करोड़ 55 लाख 16 हजार 784 है जिसमे पुरुषो की संख्या 77 लाख 19 हजार 404 और महिलाओं की संख्या 75 लाख 79 हजार 330 है। इनमें से 1 करोड़ 42 लाख 76 हजार 874 आबादी कामीण क्षेत्रों मे 10 लाख 39 हजार 910 आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। जनजातीय समाज में महिलाओ का अनुपात पुरुषो की तुलना काफी कम हैं जनजातीय समाज की महिलाये पुरुषो की भाँति समान कार्य को करती है

इनका वनो एवं प्रकृति के साथ अथाह प्रेम होता है और आज भी वे उसका संरक्षण करते है जनजातीय समाज अभी खुद को अलग मानता है। परंतु यह समुदाय प्रारंभ से ही हिन्दू रीति रिवाजों को मानने वाला तया हिन्दू धर्म को संरक्षण की खातिर बलिदान हो जाने वाला रहा है स्वतंत्रता प्राप्ति को पूर्व ईसाई मिशनरी के द्वारा धर्मान्तरण का घिनौना खेल प्रारंभ किया गया और भोली भाली महिलाओ के भोलेपन का फायदा उठा कर ईसाई पादरियो द्वारा इनसे विवाह कर जनजातीय समाज के प्रत्येक पहलू को बारीक से जानने के पश्चात् उन्हें छोड दिया करते थे। परंतु धीरे–धीरे शिक्षा का प्रचार–प्रसार इनके बीच हुआ और जो जनजातीय महिलाओं का प्रारंभ से जो स्वरूप देखा गया जैसे हमे आज भी देखने को मिलता है। वही आत्म निर्भरता, वही साहस वही, समर्थय सभी गुण विद्यमान नजर आते है मंडला की रानी दुर्गावती से लेकर भारत की प्रथम जनजातीय महिला राष्ट्रपति बनने तक का सामर्थ्य निहित है । और भी इसी जनजातीय समाज की महिलाए थी जिन्होंने देश और समाज के बहुत कार्य किए थे भारत देश को स्वतंत्र करवाने में अपना सहयोग प्रदान किया था अपने प्राणों की आहुति दी थी पर दुर्भाग्य वश उनका उल्लेख हमे देखने को नही मिलता इस शोध कार्य के माध्यम से उनके बारे में जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया जायेगा ।

महत्व

जनजातीय समाज भारत की संस्कृति एवं प्रकृति संरक्षण में योगदान प्रमुख है। साथ ही समाज मे महिलामो की स्थिति भी सुनिश्चित करता है। आधुनिक काल के इस युग मे जब शहरी करण पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है जब समाज का एक अलग ही चेहरा देखने को मिल रहा है। वही जनजातीय समाज की महिलाये आज भी परिवार को एक डोर मे बांध कर रखने का एवं अपनी पीढ़ी को अपनी प्रकृति एवं भारतीय संस्कृति के प्रति सहानुभूति को जीवित रखने का कार्य कर रही है जनजाती समाज प्रारंभ से ही प्रकृति प्रेमी, उदारवादी, भावुक रहा है और आज भी यह देखने को हमे मिलता है कि यह समाज हिन्दु रीतिरिवाज परंपराओ को मानने वाला समाज था किंतु ब्रिट्रिश सरकार द्वारा धर्मपरिवर्तन करवाना, अलगाववादी प्रवृत्ति को इनके अंदर समाहित करना, हिंदू धर्म के प्रति मनोवृति को बदलना तथा इनके भोलेपन का फायदा उठा कर उनका शारिरिक शोषण करने का प्रयास प्रारंभ किया गया । लेकिन जनजातीय समाज प्रारंभ से ही हिन्दू देवी देवता को मानने वाला समाज रहा है। अंग्रेजो की षड्यंत्र का शिकार जनजातीय समाज हुआ और शिक्षित ना होने की वजह से धर्म परिवर्तित कर ईसाई धर्म स्वीकार किया और आज भी धर्मातरण की घटनाएं हम देख सकते है लेकिन धीरे–धीरे समय के साथ जनजातीय समाज में परिवर्तन देखने को मिलता रहा है जब एक समय पर इन्हें यह माना जाता था कि यह समाज बहुत पिछडा है अन्य लोगों से मिलना–जुलना इन्हें पसंद नही नेतृत्व क्षमता का आभाव देखने को मिलता था वही आज भारत की राष्ट्रपति को रूप में जनजातीय समाज की महिला को हम देख रहे है। जो कि महामहिम द्रोपति मुर्मू जी है जनजातीय समाज की महिलाओ मे प्रारंभ से ही कलात्मकता, नेतृत्व क्षमता थी परंतु उजागर नही किया जा सका। इस शोध कार्य के माध्यम से समाज के हर क्षेत्र मे किये गये योगदान को शोध के माध्यम से समाज तक पहुंचाने का कार्य किया जायेगा।

योजना

1. विषय मे उपलब्ध सभी जानकारी एकत्रित करना, प्राथमिक, द्वितीयक स्त्रोतो के माध्यम से ।
2. जनजातीय क्षेत्रो मे जाकर साक्षात्कार के माध्यम से महिलाओं द्वारा दिये गये योगदान की जानकारी एकत्र करना।
3. सरकार द्वारा बनायी गयी सभी नितियों को उन तक पहुचाने का कार्य करना जिसके विषय में उन्हें आसानी से जानकारी प्राप्त हो सके।
4. जनजातीय महिलाओ द्वारा प्रकृति संरक्षण, परिवार संचालन स्वरोजगार एवं अन्य क्षेत्रों मे किये जा रहे कार्यों की क्वबनउमदजतल तैयार करना।
5. जनजातीय समाज की ऐसी बहुत सी महिलाएं है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया लेकिन उनका उल्लेख हमे इतिहास के पन्नो में देखने नही मिलता ,इस शोध कार्य के माध्यम से उनके योगदान को विश्व पटल पर लाने का प्रयास किया जायेगा।

दृष्टिकोण पद्यति

प्रस्तुत अध्ययन मे जनजातीय समाज मे महिलाओं की स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन शोध की सर्वेक्षण पद्धति द्वारा करने का प्रयास किया जाएगा है। जनजातीय समाज के कुछ जातियों में प्रारंभ से मातृसत्तात्मक रहा है। यहा पर महिलाओ को भी वे सारे अधिकार प्राप्त थे जो पुरुषों को थे । यहा पर स्त्री, पुरुष में समानता नजर आती है परंतु समाज मे समय के साथ– साथ परिवर्तन भी देखने को मिलता है। मध्य काल मे जहां रानी दुर्गावती जैसी वीरांगना ने देश, धर्म की एकता व अखंडता की खातिर बलिदान हो गयी लेकिन मुस्लिम अक्रांता मुगलो को अपने ऊपर हावी नही होने दिया। वही स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजो द्वारा जनजातीय समाज को अपेन ही धर्म के विरुद्ध खड़ा करने का प्रयास किया और धर्मातरण जैसे जहर को समाज में फैलाया जिसका असर हमे आज भी देखने को मिलता है स्वतंत्रता के पश्चात् हम पाते हो कि शिक्षा का प्रचार प्रसार होने से जनजातीय समाज की महिलाये शिक्षित हुई और नेतृत्व क्षमता को दिखाते हुए विधायक, सांसद, एवं भारत की पहली जनजाती महिला राष्ट्रपति के रूप में देश का नेतृत्व कर रही है शोधकर्ता के द्वारा मध्य काल से लेकर वर्तमान स्थिति तक महिलाओ की स्थिति में हुए बदलाव इन सब बिंदुओ का गहन अध्ययन कर शोध के निष्कर्ष प्राप्त कर शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा तथा बदलाव से समाज पर क्या प्रभाव पड़ा इस विषय पर भी शोध कार्य किया जायेगा निश्चय ही शोध कार्य समाज उपयोगी होगा।

संदर्भ

1. टेकरे, यालाल (1989) आदिवासी महिलाएं एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम रा.दु.वि.वि. जबलपुर
2. राय. के.एल. (1991) मध्यप्रदेश में अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के विकास में जिला प्रशासन की भूमिका शिवपुरी जिले के विशेष संदर्भ में जीवाजी . विश्वविद्यालय, ग्वालियर विषय– राजनीति शास्त्र
3. शर्मा, शशि (1991)आदिवासी महिलाएं एवं विकास विशेष रूप से मंडला जिले की डिंडोरी तहसील की आदिवासी महिलाओं के विकास का विश्लेषण. रा.दु.वि.वि. जबलपुर
4. करीरा, मोहनी (1995)'नटवारा ग्राम के गोंड परिवारों का आर्थिक जीवन रा.दु.वि.वि. जबलपुर
5. शर्मा, अलका (1995) बैगा महिला और विकास कार्यक्रम एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मंडला जिले के विशेष संदर्भ में) रा. दु.वि.वि. जबलपुर
6. सिंह, अंशुमाला (1995)– मंडला जिले की जनजातियों में हो रहे सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का विवेचात्मक अध्ययन. भोपाल वि.वि.।
7. जोशी, पारूल (2000) जनजातीय विकास में महिलाओं की भूमिका एक लेख पेज 20 पत्रिका नीति मार्ग, 20 अप्रैल से 5 मई सेवा सदन, पोली पाथर, नर्मदा रोड जबलपुर ।

8. तिवारी डॉ शिव कुमार (2010) मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिंदी गांठ अकादमी रविंद्र नाथ ठाकुर मार्ग बाणगंगा भोपाल।
9. पटेरिया शिव अनुराग ,मध्यप्रदेश अतीत और आज मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।